II nd yr Skt Deptt. Content Lecture Pallavi

कृदन्त - परिचय — कृत्य प्रकरण

कृदन्त की परिभाषा देते हुए पाणिनि ने स्पष्ट किया 'कृदतिङ्'
अर्थात् 'तिङ्' से भिन्न प्रत्यय 'कृत्' कहलाते हैं। √कृ धातु से
क प्रत्यय कर 'कृत्' बनता है। कृदन्त के शब्द संज्ञा, सर्वनाम और
विशेषण के होते हैं।
यह प्रकरण चार भागों में विभक्त है – (1) पूर्वकृदन्त (2) उत्तरकृदन्त (4) उणादि प्रकरण और (1) कृत्य प्रकरण –
इसके अन्तर्गत सात प्रत्ययों का उल्लेख है – (a) तव्य (b) तव्यत् (c) अनीयर् (d) यत् (e) क्यप् (f) ण्यत् और
(g) केलिमर् ।

सूत्रों की व्याख्या –
(1) 'तव्यत्तव्यानीयरः' — तव्यत्, तव्य और अनीयर् प्रत्ययों से बने शब्द 'चाहिए' अर्थ में प्रयुक्त होते हैं। इनसे बने शब्द पुल्लिंग, स्त्रीलिंग और नपुंसक तीनों लिंगों में बनते हैं। तव्यत् में बचने वाला अंश 'तव्य' है और 'तव्य' में भी 'तव्य' ही, किन्तु पाणिनि ने इनको अलग इसलिए गिनाया क्योंकि 'तव्यत्' का प्रयोग वैदिक है – 'तित्स्वरितम्' – जहाँ 'त्' की इत् संज्ञा या लोप होता है, वहाँ स्वारज स्वरित होता है। अनीयर् में बचने वाला अंश 'अनीय' है।

(1) √पठ् + तव्यत् / तव्य — पठितव्यम् (नपुं) पठितव्यः (पु०) पठितव्या (स्त्री)
(2) पठ् — अनीयर् — पठनीयम् — पठनीयः पठनीया (स्त्री)
(3) √गम् — गन्तव्यम् — गन्तव्यः — गन्तव्या
(4) √गम् — अनीयर् — गमनीयम् — गमनीयः — गमनीया
(5) √हन् — हन्तव्यम् — हन्तव्यः — हन्तव्या (तव्यत्)
(6) ~~√हन् — अनीयर् — ह~~ √पच् — पचनीयम् — पचनीयः — पचनीया

Scanned with CamScanner

(2) यत् - 'अचो यत्' - स्वरान्त और पवर्गान्त धातुओं से यत् प्रत्यय होता है। 'यत्' में बचनेवाला अंश 'य' है। इनसे बने शब्द पुल्लिंग, स्त्रीलिंग और नपुंसक लिंग में होते हैं। यथा -

(1) √दा + यत् - देयः (पु०), देया - √दा + यत् + टाप्, देयम् (नपुं०)

(2) √गम् + यत् - गम्यः, गम्या (स्त्री०)

(3) क्यप् - 'एतिस्तुशास्वृदृजुषः क्यप्' - √इ, √स्तु, √शास्, √वृ, √दृ और √जुष् धातुओं से क्यप् प्रत्यय होता है। 'क्यप्' में बचनेवाला अंश 'य' है। यह 'योग्य' अर्थ में प्रयुक्त होता है। इनसे बने शब्द पु० और स्त्री० के होते हैं। यथा - इत्यः - √इ + क्यप् + सु। इत्या - इ + क्यप् + टाप्।

'ह्रस्वस्य पिति कृति तुक्' - यदि धातु ह्रस्व और प्रत्यय के 'क्' 'प्' की इत् संज्ञा (लोप) हो तो धातु और प्रत्यय के बीच (तुक्) (त्) का आगम होता है।

यथा - √इ + त् + क्यप् + सु = इत्यः।
√इ + त् + क्यप् + टाप् - इत्या।

(b) - स्तुत्यः - √स्तु + त् + क्यप्।

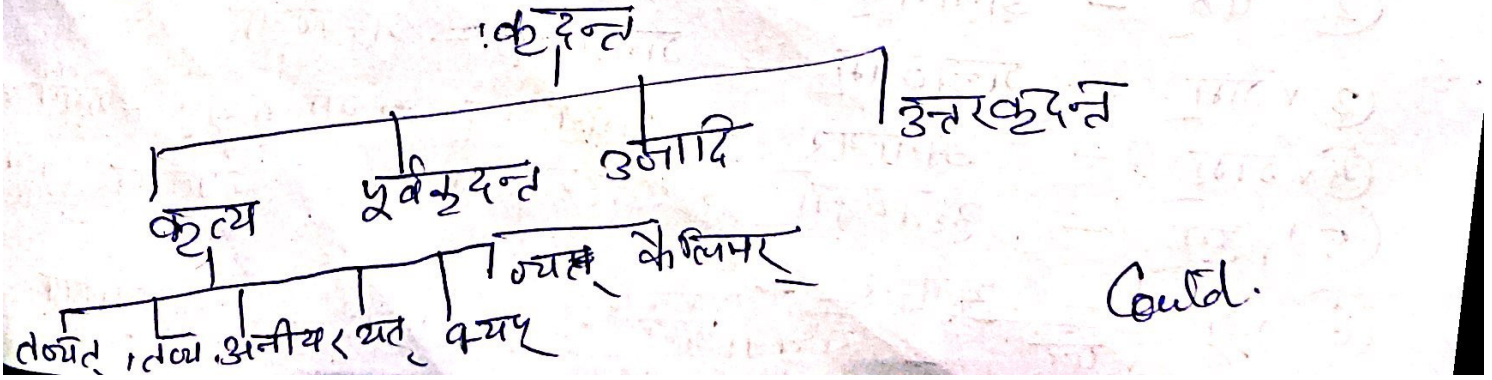

(c) शिष्यः - √शास् + क्यप्

(d) वृत्यः, दृत्यः, जुष्यः।

Contd.